तीर्थंकर महावीर संबंधित महत्त्वपूर्ण संदर्भ

नाम	: वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर, महावीर
जन्मस्थान	: कुंडपुर (वैशाली - बिहार)
पिता एवं माता	: सिद्धार्थ एवं त्रिशला (प्रियकारिणी)
वंश एवं गोत्र	: ज्ञातृवंशीय क्षत्रिय, काश्यप गोत्र
चिह्न	: सिंह
जन्म-तिथि	: चैत्र शुक्ल त्रयोदशी, ई.पू. 588
दीक्षा-तिथि	: मंगसिर कृष्ण दशमी, ई.पू. 570
तप - काल	: 12 वर्ष, 5 मास, 15 दिन
कैवल्य प्राप्ति	: बैशाख शुक्ल दशमी, ई.पू. 557
स्थान	: जृम्भक गाँव, ऋजुकूला नदी-तट (बिहार)
उपदेश-काल	: 29 वर्ष, 5 मास, 20 दिन
निर्वाण तिथि	: कार्तिक कृष्ण अमावस्या, ई.पू. 427
निर्वाणभूमि	: पावापुरी (बिहार)
आयु	: लगभग 72 वर्ष

पुरूरवा से लेकर भगवान् महावीर के 34 भव

1. पुरूरवा भील 2. पहले स्वर्ग में देव 3. भरतपुत्र मारीचि 4. पाँचवें स्वर्ग में देव 5. जटिल ब्राह्मण 6. पहले स्वर्ग में देव पहले स्वर्ग में देव 7. पुष्यमित्र ब्राह्मण 8. पहले स्वर्ग में देव 9. अग्निशर्मा ब्राह्मण 10. तीसरे स्वर्ग में देव 11. अग्निशर्मा ब्राह्मण 12. चौथे स्वर्ग में देव 13. भारद्वाज ब्राह्मण 14. चौथे स्वर्ग में देव 15. मनुष्य 16. स्थावर ब्राह्मण 17. चौथे स्वर्ग में देव 18. विश्वनंदी 19. दशवें स्वर्ग में देव 20. त्रिपृष्ठ अर्धचक्री 21. सातवें नरक में 22. सिंह 23. पहले नरक में 24. पहले स्वर्ग में देव 25 पहले स्वर्ग में देव 26. विद्याधर 27. सातवें स्वर्ग में देव 28. हरिषेण राजा 29. दशवें स्वर्ग में देव 30. चक्रवर्ती प्रियमित्र 31. बारहवें स्वर्ग में देव 32. राजा नंदन 33. सोलहवें स्वर्ग में इन्द्र 34. तीर्थंकर महावीर। इनके पूर्व व मध्य असंख्यात वर्षों तक इतर निगोद, नरकों, त्रस व स्थावर योनियों में जो भव ग्रहण किये, उनकी गिनती नहीं हो सकती।

***

कांतिमान दोनों चरणकमल स्मरण करने मात्र से ही शरीरधारियों की सांसारिक दु:ख-ज्वालाओं का जल के समान शमन कर देते हैं, वे भगवान् महावीर स्वामी मेरे नयनपथगामी बनें अर्थात् मुझे दर्शन दें।३।

यदर्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥४॥

जब पूजा करने के भाव-मात्र से प्रसन्न-चित्त मेंढक ने क्षणमात्र में गुण-गणों से समृद्ध, सुख की निधि स्वर्ग-सम्पदा को प्राप्त कर लिया, तब यदि उनके सद्भक्त मुक्ति-सुख को प्राप्त कर लें, तो कौन-सा आश्चर्य है? अर्थात् उनके सद्भक्त अवश्य ही मुक्ति को प्राप्त करेंगे, ऐसे भगवान् महावीर स्वामी मेरे नयनपथगामी बनें, अर्थात् मुझे दर्शन दें।४।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोऽद्भुत-गतिर्,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥५॥

जो अंतरंग-दृष्टि से ज्ञान-शरीरी (केवलज्ञान-पुंज) एवं बहिरंग-दृष्टि से तप्त-स्वर्ण के समान आभामय-शरीर होने पर भी शरीर से रहित हैं। अनेक ज्ञेय उनके ज्ञान में झलकते हैं, अत: अनेक होते हुए भी एक हैं। महाराजा सिद्धार्थ के पुत्र होते हुए भी अजन्मा हैं और केवलज्ञान तथा समवसरणादि लक्ष्मी से युक्त होने पर भी संसार के राग से रहित हैं। इसप्रकार अद्भुत (मोक्ष) गति के निधान भगवान् महावीर स्वामी मेरे नयनपथगामी बनें अर्थात् मुझे दर्शन दें ।५।

यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय-कल्लोल-विमला,
वृहज्ज्ञानभ्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥६॥

नानाप्रकार के नयरूपी निर्मल तरंगों युक्त जिनकी वाणीरूपी गंगा अपने सर्वज्ञ